चलो मन वृन्दावन की ओर ...

चलो मन वृन्दावन की ओर

भगति की रीत जहाँ पल पल है, प्रेम प्रीत की डोर
राधे-राधे जपते-जपते, मिल जायें चितचोर ।।

भोर ही होत श्रीवृन्दावन में, कृष्ण कथा रस बरसे
राधा रमण के दरसन, दरस किएं मन हरषे
बृज की रज है चन्दन जैसी, मन हो जाये विभोर ।।

वन उपवन में कृष्ण की छाया, शीतल मन हो जाय
मन हो जाये अती पावन, कृष्ण कथा जो पाय
दास 'नारायण' शरण तिहारी, कृपा करो इस ओर ।।

http://www.govindbhargav.in